श्रमिक माया देवी को न्याय दिलाने हेतु सीपी कार्यालय पर प्रदर्शन

फ़रीदाबाद (म. मो.) दिनांक 17 दिसम्बर को इनेलो की महिला ज़िला अध्यक्ष जगजीत कौर पन्नू के नेतृत्व में सीपी कार्यालय पर सैंकड़ों महिलाओं व पुरुषों ने प्रदर्शन किया। इतनी बड़ी संख्या में जनता को प्रदर्शन इसलिये करना पड़ा कि अकेली माया देवी को तो सीपी ऑफ़िस में घुसने भी नहीं दिया जाता।

विदित है कि माया देवी डबुआ नवादा रोड स्थित शिव टूल्स इंजीनियरिंग प्रा. लि. प्लॉट नंम्बर-315 एनआईटी, फ़रीदाबाद में बतौर हैल्पर के रूप में काम करती थी। मालिकों की हठधर्मिता के चलते माया को एक बिगड़ी हुई प्रेस पर 09.02.2013 से लगातार काम करना पड़ा जिससे दिनांक 03.08.2016 को उसका हाथ प्रेस में आकर कट गया था। ईएसआई कवर्ड न होने की वजह से माया को निजी अस्पताल में ले जाया गया। इलाज के दौरान इसके हाथ के चारो अंगुलियां काटनी पड़ी। उसके बाद मालिकों ने उसके साथ छेड़छाड़ की तथा यौन शोषण करने का प्रयास किया।

इस बाबत 05.08.2016 को थाना डबुआ कॉलोनी में शिकायत की गई। कोई कार्रवाई न होने पर थाने का घेराव किया गया तो कहीं जाकर दिनांक 27.09.2018 मालिकान के विरुद्ध एफ़आई आर नम्बर 74 जेरेधारा 354, 506 आईपीसी के तहत एफ़आईआर दर्ज की गई। लेकिन मालिकों के टुकड़ों पर पलने वाली पुलिस ने मालिकान से एक फ़र्जी शिकायत लेकर श्रमिक माया के खिलाफ भी धारा 147,149,323,506,452, के तहत एक झूठी एफ़आईआर नम्बर 75 भी दर्ज कर ली। जाहिर है इस प्रकार क्रॉस केस बनाकर पुलिस पीड़ित माया के केस को कमजोर करना चाहती थी और इसी के चलते पुलिस ने माया के साथ छेड़खानी करने वाले किसी भी अपराधी को गिरफ़्तार नहीं किया।

प्रदर्शन करती हुई श्रमिक मायादेवी और उनके साथी

पुलिस की इस काली करतूत के विरुद्ध माया लगातार पुलिस के उच्चाधिकारियों के चक्कर लगा रही है। उसकी दरखास्त एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी तक घूमती फ़िर रही है परन्तु दोषियों के विरुद्ध अभी तक कोई भी पुलिस कार्रवाई नहीं की गई। इसी को लेकर 17 तारीख को सीपी कार्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया गया। माया ने 'मज़दूर मोर्चा' कार्यालय में आकर बताया कि सीपी ने उनका केस स्टेट क्राइम ब्रांच को भेजने हेतु डीजीपी हरियाणा को लिखने की बात कही है।

मंदिर की लूट से पेट नहीं भरा तो अस्पताल का धंधा भी चला दिया

फ़रीदाबाद (म.मो.) एनएच-5 स्थित बांके बिहारी मंदिर से होने वाली कमाई को लेकर प्राय: इसे कब्जाने के लिये विभिन्न गिरोहों में झगड़े होते रहते हैं। फ़िलहाल इस पर कब्जा पूर्व पार्षद नरेश गोसाईं गिरोह का है। कमाई बढाने के लिये इन्होंने मंदिर परिसर के अगले हिस्से में अवैध निर्माण करके एक इमारत बनाई। इसे बनाते वक्त कहा गया था कि यह मंदिर एवं मुहल्ले वालों के सार्वजनिक इस्तेमाल के लिये होगी। परन्तु बीते कुछ वर्षों से इस इमारत को दो लाख मासिक किराये पर स्टार नामक अस्पताल को दे रखा है। जानकार बताते हैं कि किराये कि इस आमदनी का कोई लेखा-जोखा नहीं है। किरायेदार अस्पताल संचालक नरेश गोसाईं का करीबी रिश्तेदार है।

आमतौर पर मंदिर-गुरूद्वारों में मुफ़्त धर्मार्थ अस्पताल या स्कूल आदि जनसेवा के लिये चलाये जाते हैं। परन्तु धर्म की आड़ में चलाया जाने वाला यह अस्पताल साधारण ग़रीब जनता की लूट में कोई कसर नहीं छोड़ता। अंध-विश्वास के चलते ग़रीब लोग मंदिर को देख कर फ़ंसते भी कुछ ज़्यादा ही हैं। ऐसा ही एक झुग्गी निवासी ग़रीब मूलचंद इनका शिकार बना 14 दिसम्बर को।

उसे हाइड्रोसील (अंडकोष में पानी) की शिकायत थी। अचानक दर्द उठने से उसके परिजन घबराकर उसे इस लुटेरे अस्पताल में ले आये। मरीज मूल चंद की परिस्थिति के अनुसार उसे एन्टी बायोटिक की गोलियां व एक दो दिन के लिये कोई दर्द निवारक गोली देकर वापस भेज देना चाहिये था। इसके लिये डॉक्टर अपनी 50-100 रुपये फ़ीस ले सकता था। परन्तु इस अस्पताल में मौजूद लुटेरों ने उसे यह कह कर डराया कि वह बहुत सही टाइम पर अस्पताल आ गया है, जरा भी देर हो जाती तो मर जाता। इस प्रकार डरा कर उसे भर्ती कर के बेड पर लिटा दिया। उसे बांध कर रखने के लिये ऊपर तो ग्लूकोस की बोतल लगा दी और नीचे पेशाब के लिये कथेटर व नली लगा कर थैली बांध दी। दर्द कम करने के लिये दर्द निवारक दवा का टीका लगा दिया।

16 तारीख को यानी दो दिन बाद जब इस संवाददाता ने इस अस्पताल में जाकर वहां बैठे तथाकथित डॉक्टर अजय से पूछा तो उसने कहानी ही पलट दी, बोला कि इसके दिमाग की नस फट गई है, ब्लड प्रेशर बहुत हाई था, सीटी स्कैन कराया है, अभी स्थिति पर नज़र रखे हुए हैं, जरूरत पड़ने पर ऑपरेशन करेंगे। जबकि उनके पास ऑपरेशन करने जैसी कोई व्यवस्था नहीं है। भेद तब खुला जब इस संवाददाता ने सीटी स्कैन की रिपोर्ट मांगी। रिपोर्ट पढने पर पता चला कि वह तो किसी अजब सिंह की थी।

सारा खेल समझ आते ही संवाददाता एवं मूलचंद के परिजनों ने उसे तुरंत डिस्चार्ज करने को कहा तो आसानी से डिस्चार्ज न करें। उस तथाकथित डॉक्टर ने एक लेखपत्र तैयार किया जिसमें लिखा था कि वे मरीज़ को अपनी मर्ज़ी व जोखिम पर ले जा रहे हैं यदि कुछ हो गया तो वे स्वयं जिम्मेदार होंगे। अक्सर इस पर दस्तखत करने से परिजन घबराते हैं, किसी भी मरीज़ को अपने यहां फ़ांसे रखने के लिये इस हथकंडे का इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन यहां यह हथकंडा नहीं चला तो जैसे-तैसे डेढ घंटे में मरीज़ को डिस्चार्ज किया। बिल व रसीद देने का तो यहां कोई सिस्टम ही नहीं है, हां कुल मिलाकर साढे 12 हज़ार रुपया जरूर उससे वसूल लिये। इसमें 3000 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से बेड का किराया था। अल्ट्रा साऊंड के अलावा 450 रुपये लैबोरेट्री टैस्ट के थे। मजेदार बात तो यह निकली कि 150 रुपये ईसीजी के भी लिख रखे थे जिसका मरीज़ की बीमारी से कोई ताल्लुक नहीं था।

सोमबार 17 तारीख को उस मरीज़ को बीके अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने लगभग वैसी ही एंटी बायोटिक दवायें लिख कर 10 दिन बाद पुन: दिखाने को कहा। इन दवाओं का बाजार मूल्य 400 रुपये से भी कम था। दस दिन बाद यदि आवश्यक हुआ तो डॉक्टर एक छोटा सा ऑपरेशन, बिना मरीज़ को भर्ती किये कर देंगे।

उक्त स्टार अस्पताल जैसे सैंकड़ों फ़र्जी अस्पताल कुकरमुत्तों की तरह शहर में आम जनता को न केवल लूट रहे हैं बल्कि उनके स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ कर रहे हैं। कानूनन यह एक संगीन अपराध है। इसकी रोकथाम के लिये यूं तो बाकायदा कानून हैं। कोई भी अस्पताल खोलने के लिये ज़िला प्रशासन एवं सिविल सर्जन से लाइसेंस लेना आवश्यक होता है लेकिन यहां शासन-प्रशासन को सिवाय 'आयुष्मान भारत' की जुमलेबाज़ी से ही फ़ुर्सत कहां है जो आम जनता की जिन्दगी से खेलने वालों के विरुद्ध कोई कार्यवाही कर सके।

बोनी पोलिमर्स के ठेकेदारों ने श्रमिकों से माफ़ी मांगी

फ़रीदाबाद (इन्कलाबी मज़दूर केन्द्र) पोलिमर्स के ठेकेदारों ने औद्योगिक ठेका मज़दूर यूनियन तथा मज़दूर केन्द्र के कार्यकर्ताओं के सामने माफ़ी मांग ली। सैक्टर 24, में स्थित बोनी पोलिमर्स प्रा. लि., प्लाट नम्बर 132, मोटर गाड़ियों में लगने वाले रबर व प्लास्टिक के पार्ट बनाती है। इस कम्पनी में 10-12 ठेकेदार हैं। कम्पनी ने अपनी मुनाफ़े की हवस पुरी करने के लिये अवैध तरीकों से ठेकेदारों को ठेका दे रखा है। ठेका उन्मूलन एवं नियमन एक्ट 1970 के अनुसार कोई भी कम्पनी स्थाई प्रकृति के काम तथा लगातार चलने वाले काम पर ठेका मज़दूरों से काम नहीं करा सकती। इस तरह के कामों के लिये स्थाई मज़दूर कम्पनी रोल पर ही रखे जाने चाहिये। लेकिन कानून की परवाह किये बिना कम्पनी गैर कानूनी तरीके से उत्पादन कर रही है तथा अकूत मुनाफ़ा बटोर रही है। वर्तमान में कम्पनी रोल पर मात्र 50 मज़दूर हैं, जबकि 800 से अधिक ठेका मज़दूर हैं।

कम्पनी के ठेकेदार मज़दूरों से दबाव बनाकर अधिक से अधिक काम लेते हैं किन्तु अधिकतर मज़दूरों को न्यूनतम ग्रेड, ईएसआई पीएफ नहीं मिलता है। ठेकेदार मज़दूरों से महीने में लगभग 100 घंटा तक ओवर टाइम लगवाते है किन्तु कानून के अनुसार डबल भुगतान नहीं करते हैं। किसी भी मज़दूर से महीने में 100 घंटा ओवर टाईम में काम कराना गैर कानूनी है। ओवर टाईम का सिंगल भुगतान मज़दूरों की मज़दूरी पर डाका डालना है। कम्पनी को साल में सभी मूज़दूरों को बोनस के रूप में लगभग 8500 रुपया देना कानूनन जरूरी है। बोनी कम्पनी के ठेकेदार मज़दूरों का बोनस लूट कर हड़प लेते हैं।

बोनी कम्पनी ने फ़र्जी तरीके से 10-12 ठेकेदारों को मज़दूर सप्लाई करने का ठेका दे रखा है। प्रमुख ठेकेदारों में विनोद शर्मा, संजय सचिन त्यागी, रावत आदि हैं। उक्त ठेकेदार एक लूटमार गिरोह की तरह काम करते हैं। इनके अंडर में काम करने वाले मज़दूर जब अपना हक जैसे ईएसआई, पीएफ़ बोनस तथा समय से वेतन मांगते हैं तो ठेकेदार मज़दूरों से मार-पीट करते है तथा कमाया वेतन दिये बिना कम्पनी से भगा देते हैं। ऐसे हालात फ़रीदाबाद में अधिकतर कम्पनियों में हैं।

औद्योगिक ठेका मज़दूर यूनियन फ़रीदाबाद ने ठेका प्रथा के खिलाफ़ स्थाई कम्पनी रोल पर भर्ती के लिये शहर में एक अभियान चला रही है। इंकलाबी मज़दूर केन्द्र भी इस अभियान में भागीदारी कर रहा है। यह अभियान फ़रीदाबाद के सभी औद्योगिक क्षेत्रों में चलाया जा रहा है।

औद्योगिक ठेका मज़दूर यूनियन ने एक सर्वेपत्र जारी किया है। इसमें मज़दूरों के श्रमाधिकारों से जुड़े कुछ सवाल हैं। सर्वेपत्र के माध्यम से यूनियन यह जानना चाहती है कि कौन-कौन सी कम्पनियों में मज़दूरों के कौन से अधिकार नहीं दिये जा रहे हैं। यूनियन के कार्यकर्ता मज़दूरों के बीच जा कर सर्वेपत्र भरवाते हैं।

दिनांक 30 नवम्बर को औद्योगिक ठेका मज़दूर यूनियन एवं इन्कलाबी मज़दूर केन्द्र के छ:कार्यकर्ता सेक्टर-24 के लखानी चौक पर सर्वेपत्र भरवाने का अभियान शाम के वक्त चला रहे थे। मज़दूरों के हक अधिकार से जुड़ा यह अभियान बोनी पोलिमर्स प्रा.लि.के ठेकेदारों के लूटमार गिरोह को रास नहीं आई। ठेकेदारों ने मज़दूरों से राड़ ठान ली। ठेकेदारों ने अपने 8-10 सुपरवाईजरों से अभियान चला रहे मज़दूर कार्यकर्ताओं पर हमला करवा दिया। शराब के नशे में धुत्त सुपरवाईजरों ने मज़दूर यूनियन के कार्यकर्ताओं से मार-पीट किया, चैलेंजर माईक तोड़ दिया तथा डंडा-झंडा, सर्वेपत्र आदि लेकर भाग गये।

औद्योगिक ठेका मज़दूर यूनियन एवं इन्कलाबी मज़दूर केन्द्र के कार्यकर्ताओं ने अभियान पर हुए हमले के खिलाफ़ थाना मुजेसर में लिखित शिकायत कर बोनी पोलिमर्स प्रा.लि. के ठेकेदारों एवं सुपरवाईजरों के खिलाफ़ कानूनी कार्यवाही करने का अनुरोध किया।

ठेका मज़दूर यूनियन के कार्यकर्ताओं पर हुए हमले के विरोध में मज़दूरों का गुस्सा फूट पड़ा। फ़रीदाबाद के अनेक मज़दूरों ने डंडा-झंडा लेकर 1 दिसम्बर की शाम को ही बोनी कम्पनी के ठेकेदारों को जवाब देते हुए कम्पनी गेट से लखानी चौक होते हुये डाबरी मोड़ तक एक शानदार जुलूस निकाल कर प्रतिरोध किया।

इस दौरान यूनियन के मज़दूर कार्यकर्ताओं ने बोनी कम्पनी के ठेकेदारों एवं उनके सुपरवाईजरों को पहचान कर पुलिस को बताया तथा हमला करने वालों पर कानूनी कार्यवाई करने का दबाव बनाया। अंतत: बोनी कम्पनी सेक्टर-24 प्लाट नं-132 के ठेकेदारों एवं उनके सुपरवाईजरों ने 10 दिसम्बर को सरेन्डर करते हुये माफ़ी मांगी। माफ़ीनामे के साथ उन्होंने नुकसान का हर्जाना दिया तथा आगे से किसी भी तरह की गलती नहीं करने का बचन दिया।

दशहरा मैदान पर ताला जड़ने का षड़यंत्र, 5 करोड़ फूंकने की तैयारी

फ़रीदाबाद (म.मो.) जब से एनआईटी बसा है तभी से यहां का दशहरा मैदान, सर्कस से लेकर अन्य अनेक प्रकार के समारोहों व रैलियों का गवाह बना है। इसके एक तरफ़ ईएसआईसी अस्पताल, दूसरी तरफ़ बीके अस्पताल, तीसरी तरफ़ नगर निगम कार्यालय व सभागार बने हैं तो चौथी ओर मैट्रो सिनेमा रोड कायम है। चारों ओर से खुले इस मैदान का स्थानीय लोग अच्छा इस्तेमाल कर रहे है। ड्राइविंग सीखने वाले भी इसका लाभ उठा लेते हैं।

परन्तु स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा व सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर से जनता का यह सुख देखा नहीं जा रहा। इसलिये इन्होंने षडयन्त्र रच कर इस मैदान के चारों ओर ऊंची दीवार, उसके ऊपर ग्रिल लगा कर इसको घेरने के लिये 5 करोड़ का बजट राज्य की खट्टर सरकार से प्राप्त कर लिया है। प्रवेश के लिये एक या दो द्वार होंगे जिन पर ताला जड़ दिया जायेगा, चाबी नगर निगम के पास रहेगी। जिसे इस्तेमाल करना होगा वह इसके लिये तय फ़ीस नगर निगम को अदा करके एक निश्चित समय के लिये चाबी ले सकेगा। यह खुला मैदान भी तब उसी म्यूनिसिपल ओडिटोरियम जैसा हो जायेगा जिसका किराया न दे पाने की वजह से जनता उसका इस्तेमाल न कर सकी और वह खड़ा-खड़ा ही कंडम हो गया।

बताई जा रही योजना के अनुसार, बनने वाली चारदिवारी के साथ-साथ चलने के लिये पटरी तथा जनता के बैठने के लिये स्टेडियमनुमा सीढियां भी बनाई जायेंगी। यह सारा काम इस मैदान के सौंदर्यकरन के नाम पर होने वाला है। इसका श्री गणेश करने के लिये 16 दिसम्बर को विधायक सीमा व मंत्री गूजर ने इस मैदान में हवन का ड्रामा भी किया। मजे की बात तो यह है कि इतने बड़े-बड़े इस नेताओं के इस आयोजन में क्षेत्र की मेयर सुमनबाला सहित बमुश्किल 50-60 लोग ही शामिल होने पहुंचे।

स्मार्टसिटी के नाम पर इस तरह के सौंदर्यकरन के ड्रामों पर बर्बाद करने को तो पैसे हैं परन्तु जनता के लिये आवश्यक मूलभूत सुविधाओं के लिये सरकार के पास सदैव धन का अभाव रहता है। सरकार अपने जर्जर स्कूलों का सौंदर्यकरण क्यों नहीं करते? सारी शहर में सड़क किनारे पैदल चलने वालों के लिये कहीं पटरी नहीं है, सड़क किनारे कच्चे व ऊबड़-खाबड़ एवं अस्त-व्यस्त पड़े किनारे का सौंदर्यकरन कौन करेगा? शहर का मुख्य सरकारी अस्पताल की दुर्दशा हुकूमत को क्यों नज़र नहीं आ रही? विदित है कि मौजूदा बिल्डिंग स्वीकृत प्लान का केवल पांचवां हिस्सा है, यानी ऐसे-ऐसे चार ब्लॉक बनाने के लिये आज तक किसी सरकार के पास पैसा नहीं जुटा। इसी तरह की अन्य अनेक जरूरतें हैं इस शहर में रहने वालों की जिन्हें नज़र अंदाज़ करके मैदान के सौंदर्यकरन पर जनता का पैसा बहाने की तैयारियां हो रही हैं।

115 करोड़ नाहर सिंह क्रिकेट स्टेडियम पर भी उड़ाने की तैयारी

न केवल दशहरा मैदान बल्कि इसके निकट स्थित क्रिकेट स्टेडियम के सौंदर्यकरन के नाम पर 115 करोड़ डकारने का षड़यंत्र भी बन चुका है। इसकी शुरूआत करने के लिये मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर 23 दिसम्बर को शहर में पधारने वाले हैं।

115 करोड़ की रकम कोई छोटी रकम नहीं होती। इतनी रकम से मौजूदा स्टेडियम को बिल्कुल जड़-मूल से उखाड़ कर मैदान साफ़ कर के कम से कम दस बार बनाया जा सकता है। उक्त स्टेडियम में अब तक हो चुके अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच इस बात के गवाह हैं कि यह अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर बन हुआ है। केवल देख-रेख के अभाव में इसके मैदान की घास सूख चुकी है उनकी जगह जंगली घास व झाड़ियों ने ले ली है तथा पिच समाप्त हो गयी है। रही सही कसर खट्टर के लिये बार-बार उतरने वाले हेलिकॉप्टर ने पूरी कर दी है। खट्टर जी जब हेलिकॉप्टर से उतरते थे तब क्या उन्हें इस मैदान की दुर्दशा नज़र नहीं आती थी?

इस स्टेडियम पर इतनी बड़ी रकम खर्च करने के बारे में जानकार बताते हैं कि इसे डकारने का ठेका गुजरात के किसी संघी भाई को दिया गया है जो इस रकम में से अपना मुनाफ़ा रख कर शेष पार्टी एवं संघ के खाते में दान कर देगा। दावा है कि बाकी खट्टर जी तो पूरी तरह से ईमानदार हैं, खिचड़ी खा कर सो जाते हैं, परिवार कोई है नहीं इसलिये उन्हें तो किसी प्रकार का कोई लालच है नहीं।